गिजुभाई का गुलदस्ता-4
बर्फीली बूंद
गिजुभाई बधेका
अनुवाद, प्रस्तुति व चित्रांकन
आबिद सुरती
कोयल
समग्र शिक्षा, राजस्थान
2020-21

ISBN 978-81-237-5025-5
पहला संस्करण : 2007
चौदहवीं आवृत्ति : 2021 (*शक* 1942)

Burfili Boond *(Hindi)*

₹ 75.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता-4

बर्फीली बूंद

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति व चित्रांकन

आबिद सुरती

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

एक आंख वाली चिड़िया

मुझे चींटे ने ताटा रे ताटा

छह नमूने

बर्फीली बूंद

नानी मर गई कौए की

उलटी गंगा

अलबेली मोरनी

तीतांकठ शीतलम्

भूत प्रेत या चुहिया

तिकड़मी बनिया

एक आंख वाली चिड़िया

एक किसान था। उसने अपने खेत में ज्वार बोई थी। ज्वार में बालें आईं। बालों में दाने पड़े। एक-एक दाना मोती-सा था। एक रोज चिड़ियों ने उसी खेत में दाने चुगने की सोची। सब एक साथ पहुंच गईं। सब दूध भरे कोमल दाने चुगने लगीं। तभी किसान आ पहुंचा। तुरंत उसने अपना जाल फैलाया। सब चिड़ियां उड़ गईं। एक बेचारी, जिसकी एक आंख में अंधेरा था, फंस गई। किसान ने उसे पकड़ कर बांध दिया। फिर छड़ी से फटकारने लगा। बेचारी चिड़िया छटापटाने लगी। दूर बाड़ के पास से एक ग्वाला गुजरा। उसे देख कर चिड़िया बोली :

ओ गायों के ग्वाले,
दैया रे दैया
एक आंख वाली मैं
तो चिरैया
बचा लो मुझे मेरे
प्यारे भैया

चिड़िया की आवाज सुन कर ग्वाला खेत पर पहुंचा। उसने देखा कि किसान चिड़िया को छड़ी से पीट रहा है। वह बोला, 'इसे मत मारो। छोड़ दो। बेचारी एक आंख वाली है।'

किसान घुडका, 'कैसे छोड़ूं? मैं तो इसे थाने में ले जा कर और पिटवाऊंगा। तुम क्या जानो इसने मेरा कितना नुकसान किया है?'

ग्वाला बोला, 'ऐसा करो! तुम मेरी एक गाय ले लो और इसे छोड़ दो।'

किसान ने कहा, 'यहां से फौरन दफा हो जाओ, वरना तुम्हें भी थाने में बंद करवा दूंगा।" ग्वाला अपनी गायों के साथ आगे बढ़ गया। कुछ देर बाद उधर से भैंसों का चरवाहा गुजरा। उसे देख कर चिड़िया फिर दुहाई देने लगी :

ओ भैंसों के चरवाहे, दैया रे दैया
एक आंख वाली मैं तो चिरैया
बचा लो मुझे मेरे प्यारे भैया

चिड़िया की आवाज सुन कर चरवाहा खेत पर पहुंचा। उसने देखा कि किसान एक चिड़िया को छड़ी से पीट रहा है। वह बोला, 'अरे भाई। इसे छोड़ दो। बेचारी की एक आंख फूटी है।'

किसान बमका, 'नहीं, मैं इसे हरगिज नहीं छोड़ूंगा। इसने मेरा बहुत नुकसान किया है। मैं तो इसे फांसी पर लटकाऊंगा।'

चरवाहा बोला, 'भाई, सवाल नुकसान का है तो मेरी एक भैंस ले लो और इस बेचारी चिड़िया को छोड़ दो।'

यह सुन कर किसान भड़क उठा, 'यहां से फौरन नौ-दो-ग्यारह हो जाओ, वरना तुम्हारी भी खैर नहीं।'

अब कौन पंगा ले ऐसे जाहिल से? चरवाहा अपनी भैंसों के साथ आगे

बढ़ गया। फिर वहां से एक के बाद एक बकरियों का चरवाहा, घोड़ों का चरवाहा, ऊंटों का चरवाहा गुजरा, लेकिन किसान ने सब को डांट-डपट कर भगा दिया। फिर वह चिड़िया को ले कर थाने जाने के लिए चला। धूप तेज थी। रास्ते में उसे लू लग गई। वह एक पेड़ की छांव में बैठ गया। वहां चार पठान भी बैठे थे। उन्हें देख कर चिड़िया बोली :

ओ काबुली भैया, दैया रे दैया
एक आंख वाली मैं तो चिरैया
बचा लो मुझे मेरे प्यारे भैया

चिड़िया की दुहाई सुन कर वे किसान की ओर मुड़े। एक ने कहा, 'शैतान के बच्चे, चिड़िया को छोड़, वरना हम तेरी दोनों आंखों की बत्ती गुल कर देंगे!'

किसान बोला, 'यह धौंस किसी और पर जमाना। मैं डरने वाला नहीं।' पठानों को गुस्सा आ गया। वे उस पर टूट पड़े। किसान की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने चिड़िया को फौरन छोड़ दिया। फिर चिड़िया उड़ती हुई, चहचहाती हुई अपने झुंड में जा मिली।

मुझे चींटे ने ताटा रे ताटा
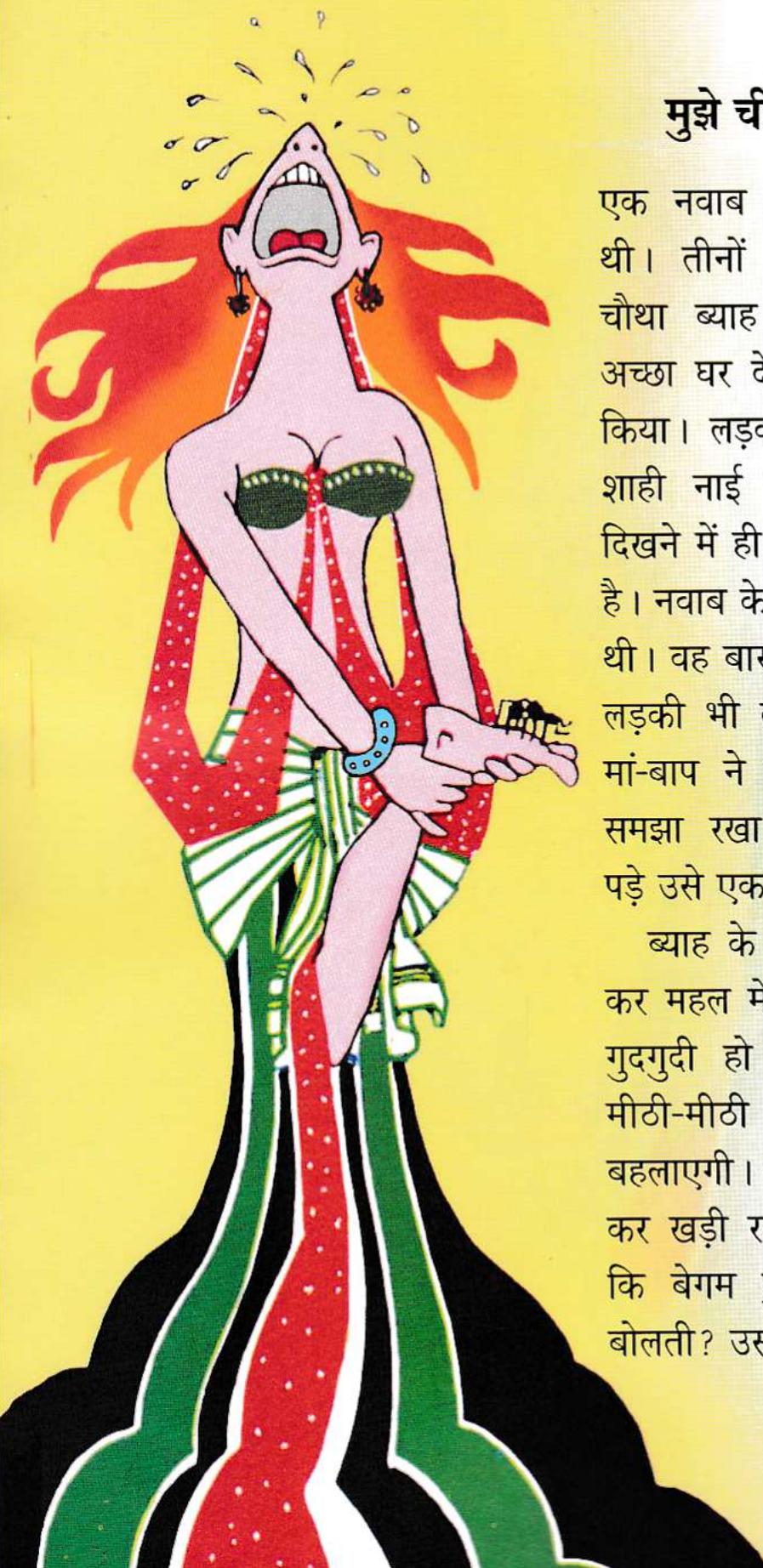
एक नवाब था। उसकी तीन बेगमें थी। तीनों तोतली थीं। नवाब ने चौथा ब्याह करने का तय किया। अच्छा घर देख कर उसने रिश्ता तय किया। लड़की की तारीफ करते हुए शाही नाई ने कहा था, वह सिर्फ दिखने में ही नहीं, स्वभाव से भी सुंदर है। नवाब के मन में खुशी समाती नहीं थी। वह बारात ले कर चला। वैसे यह लड़की भी तोतली थी, लेकिन इसके मां-बाप ने लड़की को पहले से ही समझा रखा था चाहे आकाश टूट पड़े उसे एक शब्द भी नहीं बोलना है।

ब्याह के बाद नवाब दुल्हन को ले कर महल में आया। उसे मन ही मन गुदगुदी हो रही थी कि नई बेगम मीठी-मीठी बातें कर उसका दिल बहलाएगी। पर नई बेगम तो गूंगी बन कर खड़ी रही। नवाब ने बहुत चाहा कि बेगम कुछ बोले, पर वह क्यों बोलती? उसने तो जैसे अपने होंठ सी

लिए थे। नवाब बुदबुदाया 'हाय, कुंए से निकला तो खाई में गिरा। तोतली को छोड़ बोलती को लाने गया तो यह गूंगी गुड़िया पल्ले पड़ी।'

एक रोज चौथी बेगम बगीचे में फूल लेने गई। वहां एक चींटे ने उसे काट लिया। वह एकदम चीख उठी, 'उई, मुझे चींटे ने ताटा रे ताटा।' नवाब झरोखे में खड़ा था। उसने यह सुना। वह समझ गया, चौथी बेगम भी तोतली है।

नवाब ने यह राज गुप्त रखा था कि उसकी चारों बेगमें तोतली हैं। लेकिन कब तक? दीवान को शक हुआ। दाल में जरूर कुछ काला है। सही जानकारी पाने के लिए एक रोज उसने नवाब से अकेले में कहा, 'हुजूर, गांव वाले कानाफूसी करते हैं कि आपकी चारों बेगमें तोतली हैं।'

नवाब ने कहा, 'दीवान जी! गांव वाले तो जाहिल हैं। क्या आपका भी कोई कल-पुर्जा ढीला हो गया है?' दीवान बोला, 'आप मुझे दावत दें तो तसल्ली हो जाए।'

नवाब ने दीवान को भोजन के लिए न्योता दिया। इससे पहले सब बेगमों को चेताया गया कि कोई भी अपना मुंह न खोले। नवाब और दीवान दोनों खाना खाने बैठे। तरह-तरह की रसोई बनाई गई थी। सिवईं भी बनी थी।

दीवान ने काफी कोशिश की कि बेगमें कुछ बोलें, पर एक ने भी मुंह नहीं खोला। तभी उनको एक तरकीब सूझी। सिवईं बहुत ही लजीज बनी थीं। वह खाते हुए दीवान ने प्रशंसा शुरू कर दी। बेगमें मारे खुशी के फूल कर कुप्पा होने लगीं। इस मौके का लाभ उठा कर दीवान ने नवाब से पूछा, 'सरकार, ये सिवईं किसने बनाई है?' जवाब एक बेगम ने दिया, 'ये सिवईंयां तो मैंने बबबबब बनाईं।' नवाब के मना करने पर भी उसने मुंह

खोला था, इसलिए दूसरी ने सयानी बन कर उससे कहा, 'मना करने पर भी टू बबबबब बोई त्यों?' तीसरी बेगम ने सोचा, यह तो बहुत ही बुरा हुआ। नवाब ने साफ-साफ चेताया था... खबरदार, कोई कुछ भी नहीं बोलेगा। फिर भी ये दोनों बोलीं! उसके मन में थोड़ा गुस्सा भी आया और कुछ डेढ़ सयानी बन कर कड़ी आवाज में टूटी, 'ये बोई तो बोई पर आप त्यों बबबबब बोई?'

चौथी बेगम ने सोचा, ये तीनों महामूर्ख हैं। दीवान जी को सब पता चल गया। उसे थोड़ा गर्व भी हुआ। दीवान जी को उसके अपने राज का पता अब तक नहीं चला था। यह सोच कर वह खुश हो उठी और गर्व से बोली, 'मैं तो बबबबब बोई बी नै और तिसी से कुछ तहा बी नै!' यह सुन कर नवाब के साथ दीवान भी खिलखिला कर हंस पड़ा।

छह नमूने

1. किस्सा एक काठ के उल्लू का

किसान का एक लड़का था। वह मूर्ख नंबर वन था। एक बार खेत से घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक घोड़े वाला मिला। घोड़ा देख कर लड़के का जी चाहा, वह उसे खरीद ले। उसने घोड़े वाले से पूछा, 'क्यों जी, इस घोड़े का दाम क्या लोगे?' घोड़े वाले ने कहा, 'इसके पूरे सौ रुपये लगेंगे!' लड़का बोला, 'मेरे पास तो सिर्फ पचास रुपये हैं।'

घोड़े वाला घुड़का, 'दफा हो जाओ। यह घोड़ा है, गधा नहीं, जो पचास रुपयों में मिल जाए।' लड़का सोच कर बोला, 'हम एक काम करते हैं। तुम मुझे घोड़ा दो। मैं ये पचास रुपये तुम्हे नकद देता हूं।' घोड़े वाले ने पूछा, 'और बाकी के पचास?' लड़के ने तुरंत कहा, 'उसके बदले में तुम अपना घोड़ा वापस ले लो। सौदा कैसा रहा?' बात घोड़े वाले की समझ में आ गई।
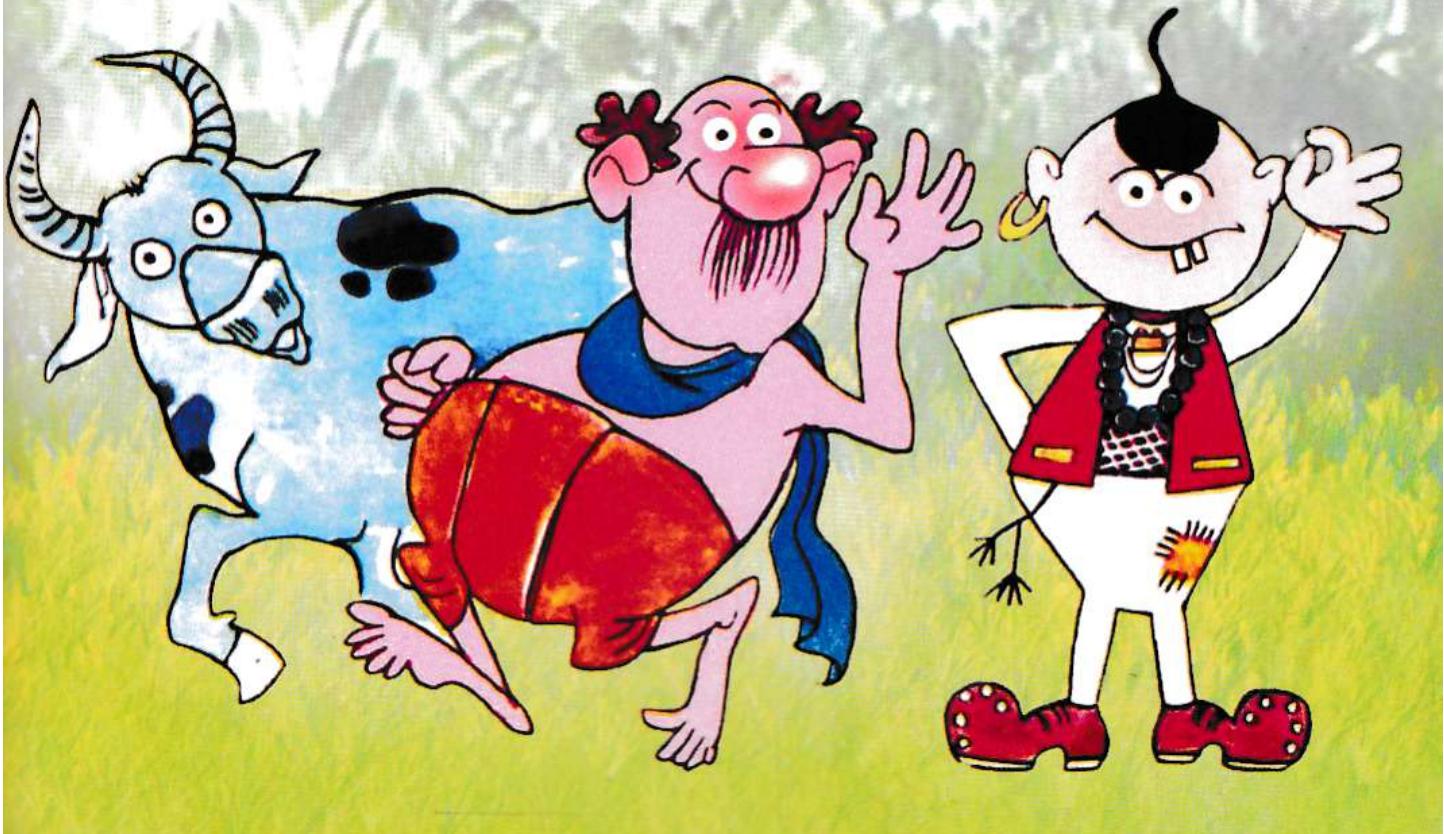
वह कोई साधु-संत तो था नहीं। पचास रुपये और घोड़ा दोनों ले कर वह वहां से बेखटके चल पड़ा। यहां लड़का भी बहुत खुश था। वह टिक्-टिक् आवाज करता, घोड़ा हांकने का खेल खेलता हुआ अपने घर आया। फिर बोला, 'पापा, पापा, आज मैंने एक घोड़ा खरीदा।'

पिताजी ने पूछा, 'कहां है घोड़ा?'

लड़के ने बताया, 'दरअसल बात यह हुई कि घोड़ा मैंने सौ रुपयों में खरीदा, लेकिन मेरे पास तो सिर्फ पचास ही थे। वह पचास रुपये मैंने घोड़े वाले को दिए और बाकी के पचास के बदले में मैंने उसे उसका घोड़ा लौटा दिया। हम अपने माथे पर बेकार कर्ज क्यों रखें?' पिताजी ने कहा, 'वाह रे काठ के उल्लू, वाह! तेरी अक्ल के क्या कहने!'

2. किस्सा एक महामूर्ख का

एक महामूर्ख था। एक बार वह अपनी बहन के घर गया। बहन ने बड़ी उमंग से भाई को चूरमा के लड्डू खिलाए। भाई को लड्डू बहुत पसंद आए। उसने बहन से पूछा, 'क्या नाम है इनका?' बहन ने कहा, 'चूरमा।' भाई ने सोचा कि घर पहुंच कर चूरमा बनवाऊंगा और जम कर खाऊंगा। वह मन ही मन चूरमा की रट लगाता हुआ अपने घर की ओर चला।

वह जानता था, रटेगा नहीं, तो भूल जाएगा। रास्ते में एक छोटा-सा नाला पड़ा। उसे पार किए बिना आगे बढ़ना मुश्किल था। उसने एक तरकीब की। लकड़ी का छोटा-सा पुल बनाया और नाला पार भी कर गया। लेकिन इस जद्दोजहद में वह 'चूरमा' शब्द भूल गया और उसके बदले 'सूरमा' जबान पर चढ़ गया। थोड़ी देर बाद घर पहुंच कर उसने घर वाली से कहा, 'सुनो, फटाफट मेरे लिए सुरमा बना दो। मुझे अभी वही खाना है।

मेरी बहन ने बहुत मीठे सूरमा बनाए थे।' घर वाली सोच में पड़ गई...सूरमा तो आंखों में लगाया जाता है। क्या खाया भी जाता होगा? बात उसकी समझ में नहीं आई। देर होती देख कर महामूर्ख का गुस्सा बढ़ने लगा। बोला, 'निठल्ली, बनाती क्यों नहीं? कद्दू की तरह बैठी क्यों है?' घर वाली ने कहा, सूरमा कैसे बनता है यह मैं तो नहीं जानती। आपकी सूरमे वाली बहन जानती है। वापस उसके घर जाइए और उसी से बनवा
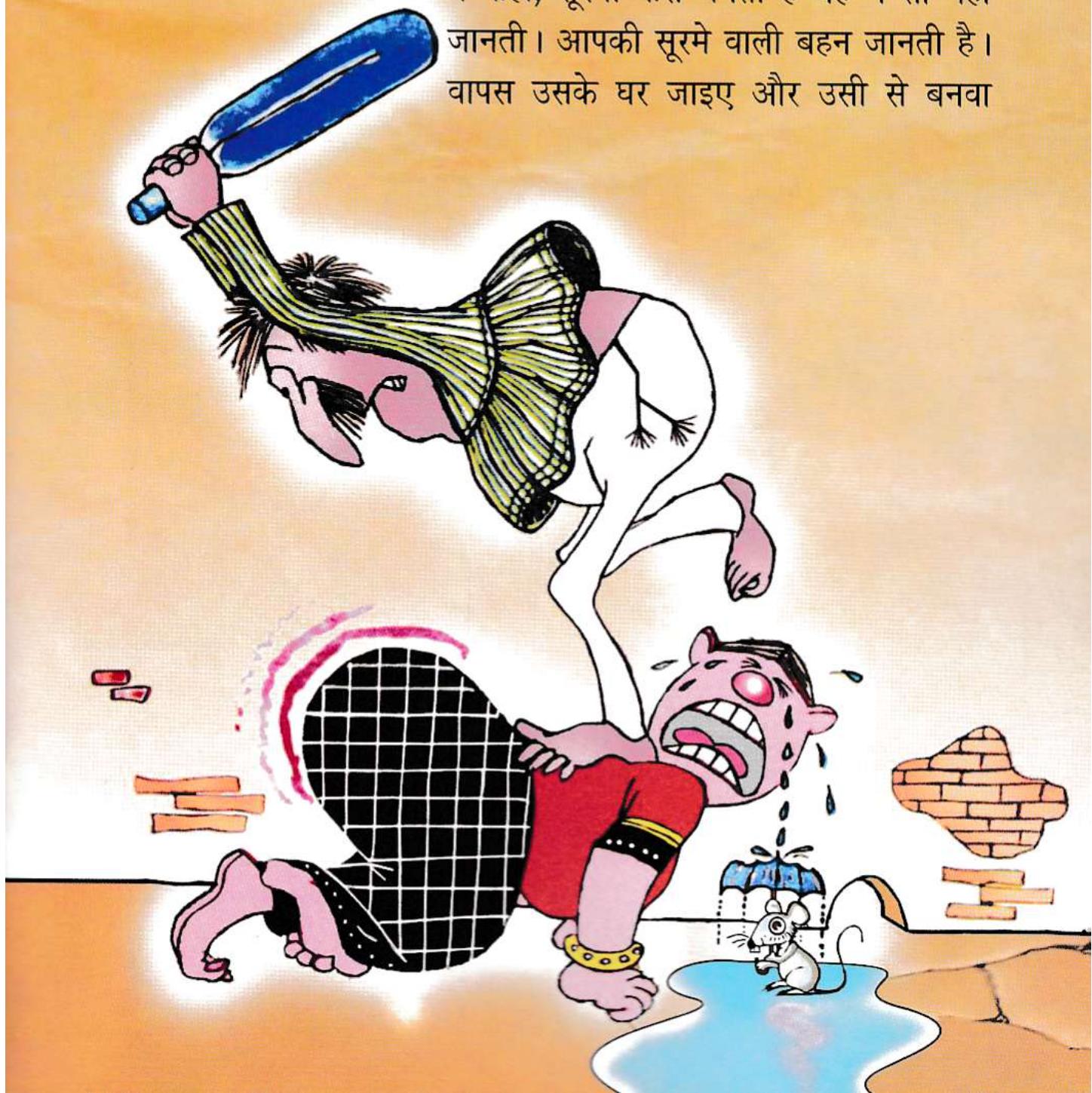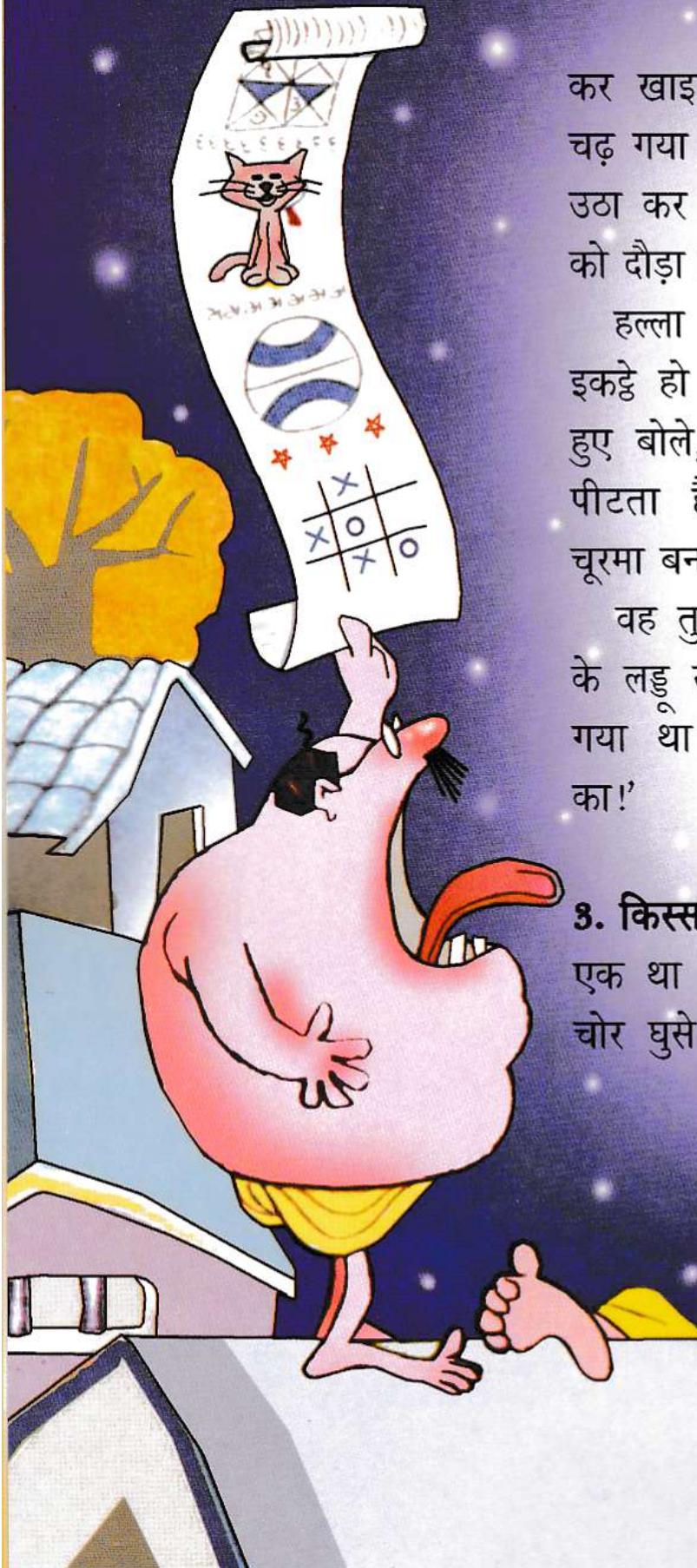
कर खाइए।' यह सुन कर उसका पारा चढ़ गया। पास ही में एक डंडा पड़ा था। उठा कर वह अपनी घर वाली को पीटने को दौड़ा।

हल्ला सुन कर पास-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। वे पति को उलाहना देते हुए बोले, 'अरे-अरे, बीवी को कोई ऐसे पीटता है! मार-मार कर बेचारी का चूरमा बना डाला।'

वह तुरंत बोला, 'यही! मुझे तो चूरमा के लड्डू खाने हैं। इसी का नाम मैं भूल गया था।' सबने कहा, 'महामूर्ख कहीं का!'

३. किस्सा एक बौड़म का

एक था ब्राह्मण। एक रात उनके घर में चोर घुसे। आहट सुन कर ब्राह्मण बीवी

के कान में फुसफुसाया, 'क्यों जी, कुछ सुनाई देता है? हमारे घर में चोर घुसे हैं।' बीवी बोली, 'हां, लगता तो यही है। आप कहें तो मैं जोर से चिल्लाऊं और सारे गांव को इकट्ठा कर दूं।

ब्राह्मण ने कहा, 'ठहरो। हम हैं पंडित। बिना मुहूर्त देखे कोई काम नहीं करते। मुझे अपनी पोथी में देखने दो कि आज चिल्लाने का मुहूर्त है या नहीं।' ब्राह्मण पोथी देखने लगा।

बीवी ने अधीर हो कर पूछा, 'क्यों जी, मुहूर्त है या नहीं?'

ब्राह्मण बोला, 'मुहूर्त कोई फूल-पत्ता नहीं कि जब चाहा तोड़ लिया। वैसे मुहूर्त निकल रहा है, आज से छह महीने बाद का। इसलिए छह महीने बाद सोचेंगे। अभी सो जाओ।'

चोरों के लिए अब चिंता की कोई बात नहीं रही। अपना ही घर समझ कर जो भी उठाना था, उठा कर ले गए। इस बात को छह महीने बीत गए। ब्राह्मण बोला, 'आज हम चोरों को सबक सिखाएंगे। आज का मुहूर्त एकदम सही है।'

जब आधी रात हुई, तो ब्राह्मण और उसकी बीवी, दोनों जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगे, 'गांव वालों होशियार! चोर...चोर...घुसे हैं।' यह सोच कर कि चोर गरीब ब्राह्मण को लूट कर चले जाएंगे, पास-पड़ोस के लोग दौड़ कर आए और पूछने लगे, 'महाराज! बताइए, चोर कहां छिपे हैं? हम उनका भुरता बना डालेंगे।'

ब्राह्मण बोला, 'भाइयो, चोर तो छह महीने पहले आए थे। पर खबर आज दे रहा हूं।' लोगों ने कहा, 'महाराज! आप तो हमें बौड़म मालूम होते हैं। कहीं छह महीनों बाद कोई चोरी-डाके की खबर देता है!' ब्राह्मण बोला, 'लेकिन भाइयो, तब शुभ मुहूर्त ही नहीं था, तो मैं क्या करता?'

4. किस्सा अकल के एक दुश्मन का

अकल का एक दुश्मन था। जंगल में रहता था, इसलिए उसने कभी कोई दीया नहीं देखा था। एक रोज वह दूर-दराज के एक गांव में पहुंचा और एक ग्वाले के घर ठहरा। रात होने पर घर में दीया जलाया गया। जगमग दीया देख कर अकल का दुश्मन सोच में पड़ गया...यह तो कोई अजूबा मालूम होता है! रात में सब सो जाएंगे, तब मैं इस जगमगिये को घास की ढेरी में छिपा दूंगा और सुबह जाते समय चुपके से निकाल कर चलता बनूंगा।

सब सो गए। अकल का दुश्मन हौले से उठा और आले के पास पहुंचा। बड़ी सावधानी से उसने जलता हुआ दीया उठाया और चुपके से घास की ढेरी में रख दिया। फिर वह अपनी खाट पर आ कर ऐसे लेट गया कि किसी को भनक तक नहीं लगी। थोड़ी देर में वहां धू-धू करती आग जल उठी। अकल का दुश्मन तुरंत दौड़ा और कुछ खोजने लगा।

लोगों ने कहा, 'वहां क्या खोज रहे हो? हटो वरना जल मरोगे।' वह बोला, 'वहां तो मेरा जगमगिया है। उसे मैंने घास में छिपाया है।'

लोगो ने पूछा, 'यह जगमगिया क्या होता है।' उसने कहा, 'वही, जो रात उस आले पर रखा गया था। जगमग-जगमग हो रहा था।'

सब बोले, 'अकल के दुश्मन! तो यह आग तूने लगाई है!' फिर सबने मिल कर उसको भगा दिया।

5. किस्सा एक बेवकूफ कुंबे का

एक अहीर था। उसके एक लड़का था। वह रोज गायें चराने जंगल में जाता। एक रोज वह जंगल की ओर जा रहा था, तब रास्ते में उसे एक ब्राह्मण मिला। ब्राह्मण चुटकी बजा रहा था और राम-राम बोल रहा था। यह आवाज सुन कर लड़के को बड़ा अचरज हुआ। यह आवाज उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। इसलिए पूछा, 'महाराज, आप यह क्या बजा रहे हैं?' ब्राह्मण चालाक था। उसने तुरंत ताड़ लिया। बोला, 'अरे बेटा! यह तो मेरी धन्नो है। मैंने इसे पाला है।' लड़के ने कहा, 'महाराज, अपनी धन्नो आप मुझे दें तो मैं अपनी यह गाय तन्नो आप को दे दूंगा।' ब्राह्मण यही तो चाहता था। उसने लड़के को झटपट चुटकी बजाना सिखा दिया और गाय ले कर चलता बना!

लड़का खुश होता हुआ घर पहुंचा। आंगन में खाट बिछा कर दादा जी बैठे थे। उन्हें देख कर लड़के ने चुटकी बजाते हुए कहा, 'दादा जी, दादा जी! अपनी तन्नो दे कर मैं यह धन्नो ले आया हूं। जरा सुनिए तो, यह कितनी बढ़िया बजती है?' दादा जी भी उस लड़के से कुछ कम नहीं थे। बोले, ' अरे वाह, यह धन्नो तो बड़ी मजेदार चीज है। फटाफट बजती है और झटपट बोलती है।' लड़के की खुशी का ठिकाना नहीं था। जब ब्यालू का समय हुआ, तो उसने मां से पूछा, 'मम्मी, धन्नो को मैं कहां रखूं?' मां बोली, 'उस कुल्हड़ में रख दे। और हां...जरा संभाल कर रखना।'

उस रात लड़के ने मारे खुशी के दुगुना खाना खाया। लेकिन जब हाथ धो कर

वह धन्नो को लेने पहुंचा, तो उसे कुल्हड़ में धन्नो नहीं मिली। लड़के का चेहरा उतर गया। वह बोला, 'मम्मी, मम्मी! मेरी धन्नो गायब हो गई।'

दादा जी ने कहा, 'अभी तो यहां थी और अभी चली गई? लगता है, कुल्हड़ ही उसे निगल गया!' सब एक साथ बोले, 'कुल्हड़ को तपाना पड़ेगा। इसे तपाने पर ही धन्नो वापस आएगी।' आंगन में बड़ा-सा अलाव जला कर उसमें कुल्हड़ डाल दिया गया। जब आग बढ़ी तो कुल्हड़ तड़का। लड़के ने अनजाने ही चुटकी बजाई। फिर बोला, 'लो, मेरी धन्नो मिल गई।' यह सुन कर सब खुश हो गए।

6. किस्सा एक भोंदूराम का

एक था भोंदूराम स्टेशन माटर। एक बार उसका भांजा बीमार पड़ा। उसकी सेहत का हाल जानने के लिए वह गांव गया। भांजा ठीक-ठाक ही था। जब भोंदूराम वापस अपने घर आने को निकला तो रास्ते में उसे अपने ही गांव का हलवाई मिल गया। हलवाई था मसखरा। उसने पूछा, 'काका, आप कहां गए थे?' भोंदूराम बोला, 'भांजे के घर।' हलवाई ने कहा, 'तब तो आपको कुछ भी नहीं पता होगा।' भोंदूराम बोला, 'नहीं भैया, दो दिनों में हो भी क्या सकता है? तुम्हारी काकी तो ठीक है न?' हलवाई ने कहा, 'अब क्या बताऊं, काका। मेरी तो जबान ही नहीं खुल रही। हाय रे किस्मत, हमारी काकी विधवा हो गई है। गजब हो गया काका, गजब हो गया।'

भोंदूराम चौंका, 'क्या कहा! तुम्हारी काकी सचमुच बेवा हो गयी? नामुमकिन। वह तो हट्टी-कट्टी इंजन जैसी मोटी थी। वह विधवा कैसे हो सकती है?'

हलवाई मन ही मन मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ गया। भोंदूराम अपने घर

की गली के मुहाने तक आया और अंगोछा माथे पर ओढ़ लिया। फिर बुक्का फाड़ कर रोने लगा। गली-मुहल्ले के लोग इकट्ठा हो गए। भोंदूराम अपने घर आ कर चबूतरे पर बैठा और सिर पिटने लगा। अंदर से उसकी बेटी दौड़ आई। वह समझी भांजा चल बसा। बोली, 'पापा, रोने से क्या लाभ? जो होना था, सो हो गया।' भोंदूराम चुप हो कर आंखें पोंछने लगा। अब बेटी ने पूछा, 'आपका भांजा तो जवान था। अचानक उसकी मौत कैसे हो गई?' वह बोला, 'बेटी! मेरा भांजा तो चंगा है। पर यहां दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। रास्ते में मुझे माधो हलवाई ने खबर दी कि तुम्हारी मां विधवा हो गई। बेटी, अब मैं रोऊं नहीं तो क्या करूं!'

बेटी बोली, 'लेकिन पापा, जब आप जिंदा हैं तो मेरी मां विधवा कैसे हो सकती है?' भोंदूराम बोला, 'अरे हां...यह तो मुझे सूझा ही नहीं।'

बर्फीली बूंद

एक बुढ़िया थी। वह एक कुटिया में रहती थी। बारिश के दिन थे। एक रोज मूसलाधार पानी बरसा। बुढ़िया की छत टपकने लगी। टपाक-टपाक...रात को एक शेर ने बुढ़िया की कुटिया के पिछवाड़े पनाह ली थी। भीतर बुढ़िया मारे ठंड के कांप रही थी। उसके कपड़े भीग गए थे। बूंदें अभी भी टपक रही थी। अब ठंडी-ठंडी बूंदें बुढ़िया पर भी गिरने लगीं। वह बोली :

मैं शेर से नहीं डरती राम जी
मैं बाघ से नहीं डरती श्याम जी
मैं तो डरती हूं बर्फीली बूंद से

बुढ़िया की यह बात सुन कर शेर सोच में पड़ गया। यह बुढ़िया शेर से नहीं डरती, बाघ से नहीं डरती। सिर्फ बर्फीली बूंद से डरती है। आखिर यह बर्फीली बूंद है क्या? तभी छत में से बुढ़िया की पीठ पर एक बड़ी-सी बूंद पड़ी। बुढ़िया सिहर कर बोली :
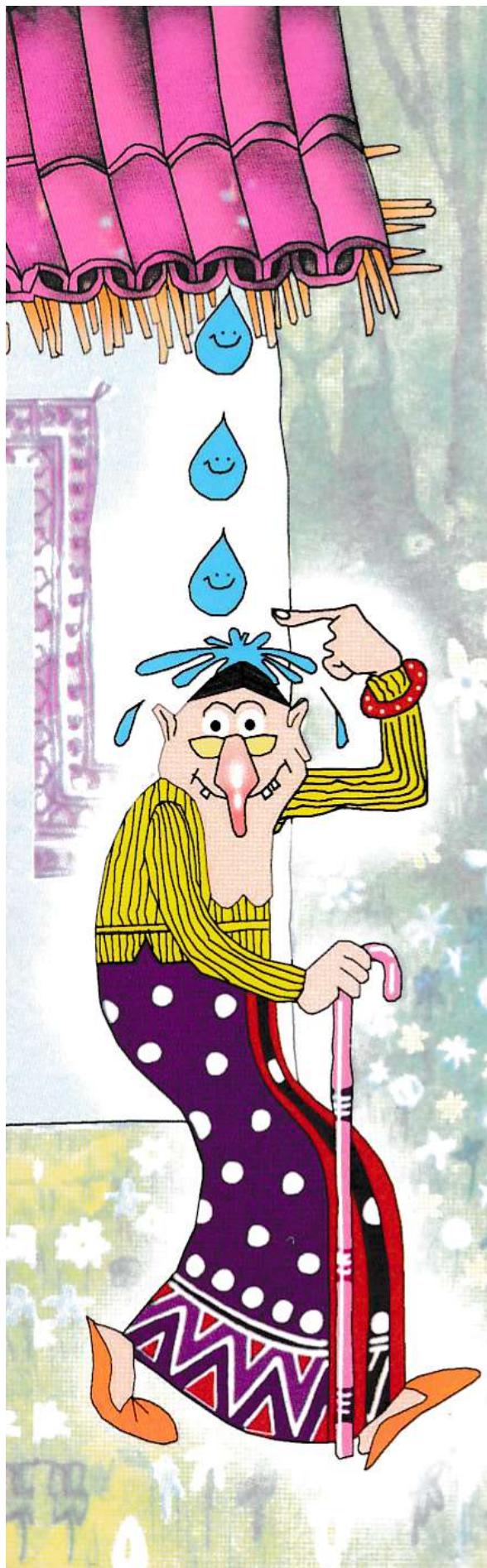
मैं शेर से नहीं डरती राम जी
मैं बाघ से नहीं डरती श्याम जी
मैं तो डरती हूं बर्फीली बूंद से

बुढ़िया के मुंह से फिर वही शब्द सुन कर शेर घबराया और बर्फीली बूंद से बचने के लिए दुम दबा कर जंगल की ओर दौड़ा। रास्ते में बरगद का एक पेड़ था। एक बंदर ठंड से कांपता हुआ उसकी डाल पर बैठा था। नीचे एक मुसाफिर लेटा था। शेर को घबराया देख कर बंदर ने पूछा, 'शेर खान! आप तो जंगल के राजा हैं। यों कांपते हुए कहां भागे जा रहे हैं?' शेर ने कहा, 'बजरंग, मैं तो बर्फीली बूंद से डर कर अपनी गुफा में छिपने जा रहा हूं। एक बुढ़िया कह रही थी...'

मैं शेर से नहीं डरती राम जी
मैं बाघ से नहीं डरती श्याम जी
मैं तो डरती हूं बर्फीली बूंद से

पेड़ के पास शेर को खड़ा पा कर पेड़ के नीचे लेटे हुए मुसाफिर को डर लगा कि कहीं यह मुझे ही खा न जाए। इसलिए उसने पेड़ पर चढ़ने का सोचा। जैसे ही वह चढ़ने लगा कि उसके हाथ में बंदर की लटकती हुई दुम आ गई। दुम के फंसते ही बंदर चौंक पड़ा और यह मान कर कि बर्फीली बूंद आ पहुंची है, वह जोर से चीख कर पेड़ पर से कूदा। मुसाफिर के हाथ से दुम फिसल गई और वह भी नीचे आ गिरा। जब बंदर चीखा और मुसाफिर धड़ाम से नीचे गिरा, तो शेर ने भी मान लिया कि बर्फीली बूंद आ पहुंची है। वह इतना डर गया कि दौड़ता हुआ दूर निकल गया।
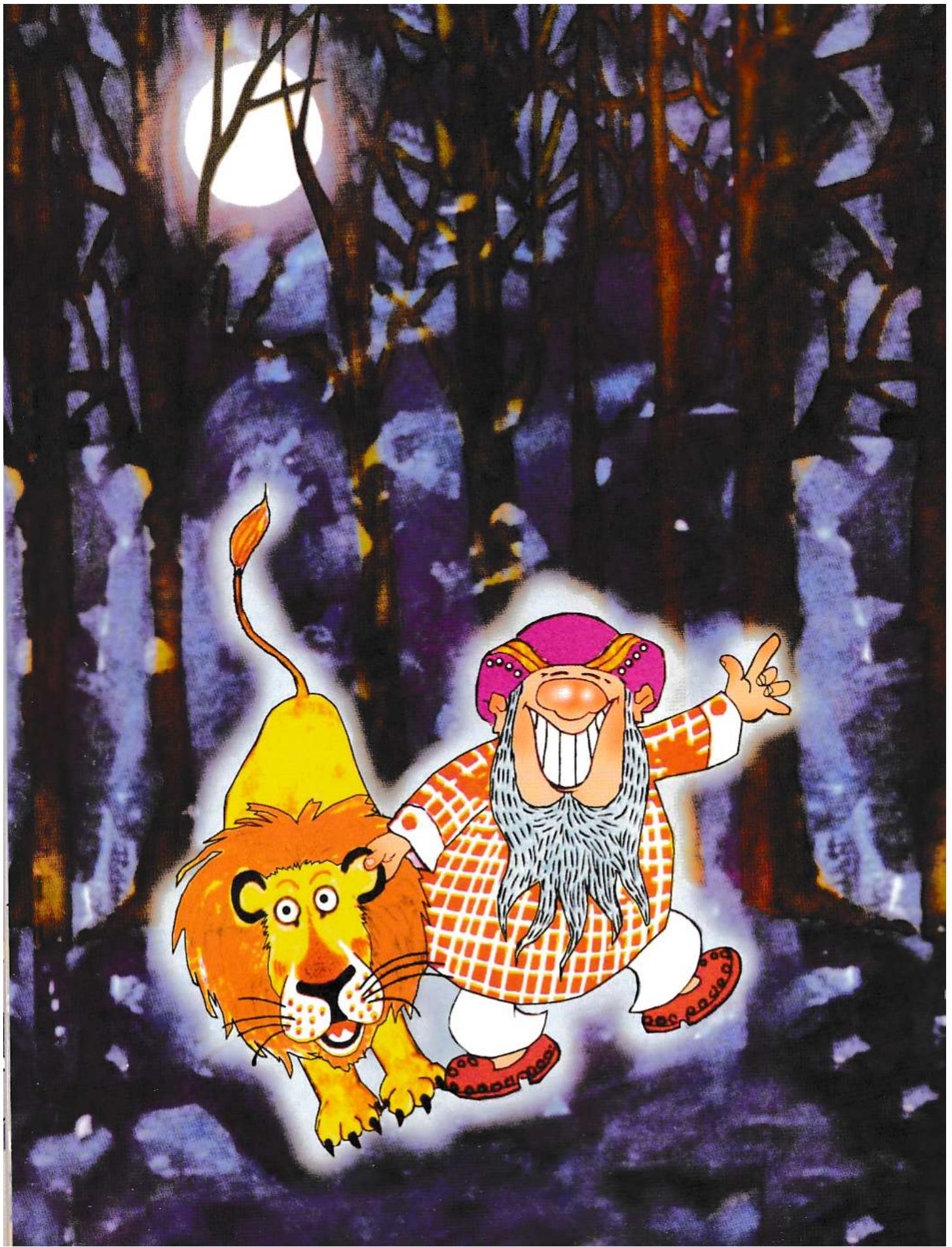
उसी रात एक किसान की बकरी खो गई थी। किसान उसे खोजता हुआ जंगल में घूम रहा था। अंधेरे में शेर उससे टकरा गया। वह समझा कि उसकी बकरी उससे टकराई है। इसलिए उस पर ढेर सारी लानतें बरसाईं, उसके कान पकड़े और दो-चार झापड़ भी रसीद किए। शेर ने सोचा...अब तो मैं बेमौत मारा जाऊंगा। मैं इस बर्फीली बूंद के शिकंजे से छूट नहीं पाऊंगा। इसी डर के कारण उसने किसान की मार भी सह ली और भीगी बिल्ली बन कर किसान के साथ चलने लगा। घर पहुंच कर किसान ने बकरी के खूंटे से उसे बांध दिया।

सबेरे उठ कर जब किसान की जोरू बकरी को छोड़ने के लिए आई तो उसने बकरी की जगह शेर को बंधा पाया। उस पर तो मानो गाज गिर पड़ी हो, ऐसे ठिठक गई। फिर वह उलटे पांव भीतर गई और किसान से सारी बात कही। किसान ने खिड़की से झांक कर देखा। उसे भी यकीन हो गया कि खूंटे से बकरी नहीं, शेर बंधा है, तो उसने चुपके से बाहर आ कर शेर के गले में बंधी रस्सी काट दी और दौड़ कर फिर से घर में घुस गया।

शेर ने सोचा...ठीक ही हुआ, जो बर्फीली बूंद से छुटकारा मिला गया। वह भी जंगल की ओर दौड़ गया...पूंछ दबा कर।

नानी मर गई कौए की

एक था कौआ। वह हर दिन बनिए के बेटे के हाथ से पूड़ी छीन कर ले जाता था। बनिए ने उसे सबक सिखाने का तय किया। एक रोज बनिए ने अपने मुंह में दही भरा। फिर वह गांव के बाहर खड़े पीपल तले जा कर ऐसे लेट गया, मानो वह मुर्दा हो। तभी कौआ उड़ता हुआ वहां आ पहुंचा। उसने सोचा...यह बनिया तो चल बसा। अब मैं इसके मुंह में भरा हुआ दही खा सकता हूं। जैसे ही कौए ने बनिए के मुंह में अपनी चोंच डाली, बनिए ने अपना मुंह बंद कर लिया। कौए की चोंच बनिए के दांतों के बीच फंस गई।

अब कौआ तेजी से सोचने लगा...चोंच छुड़ाने की कोई तरकीब खोजनी होगी। उसने किसी तरह बनिए से पूछा, 'कौन? नंदू काका हैं आप?' बनिए ने सोचा, अगर जवाब दिया तो मुंह खुल जाएगा ओर कौआ उड़ जाएगा। इसलिए दांत भींच कर वह बोला, 'हूं. ..तेरा काका हूं।' कौए
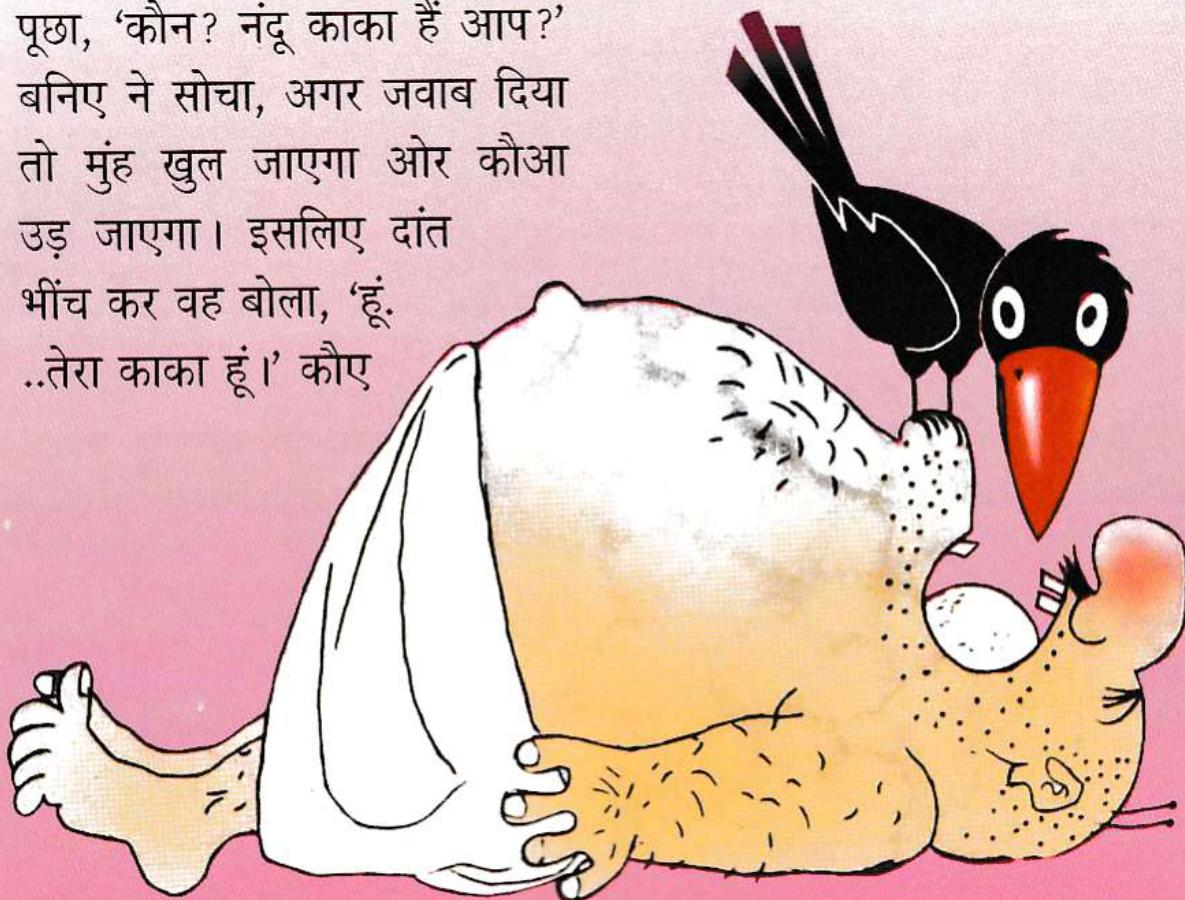
की तो नानी मर गई, क्योंकि दांत भींच कर बोलने से उसकी चोंच बुरी तरह दबी और वह अधमरा-सा हो गया। अब बनिए को लगा...कौए को काफी सजा मिल चुकी है, इसे छोड़ देना चाहिए। उसने कौए को छोड़ दिया। इसके बाद कौआ बनिए के बेटे के हाथों से पूड़ी छीनना ही भूल गया।

उलटी गंगा

एक बनिया था। भला था। भोला था। नीम पागल भी था। एक छोटी-सी दुकान चलाता था। दाल, मुरमुरे, रेवड़ी जैसी चीजें बेचता और शाम तक दाल-रोटी का जुगाड़ कर लेता था। एक रोज दुकान बंद कर देर रात घर जा रहा था, तभी रास्ते में उसे कुछ चोर मिले। बनिए ने उनसे कड़क कर पूछा, 'इस वक्त अंधेरे में कहां जा रहे हो?' चोर बोले, 'हम तो सौदागर हैं। आप हमें क्यों टोक रहे हो?' बनिए ने कहा, 'लेकिन एक पहर रात बीतने के बाद आप जा कहां रहे हो?' चोल बोले, 'माल खरीदने।' बनिए ने पूछा, 'माल नकद खरीदोगे या उधार?' चोर बोले, 'न नकद, न उधार। पैसे तो देने ही नहीं है।' अब बनिए ने चहक कर कहा, 'आपका यह पेशा तो बढ़िया है। क्या आप मुझको अपने साथ ले चलेंगे?' चोर बखुशी बोले, 'बेशक चलिए। आपको लाभ ही होगा।'

बनिए ने कहा, 'अब यह बताओ कि यह धंधा कैसे होता है?' चोर बोले, 'लिखो, किसी के घर के पिछवाड़े चुपचाप सेंध लगाना।' बनिए ने तुरंत कहा, 'लिखा।' चोर बोले, 'फिर दबे पांव घर में घुसना।' बनिए ने कहा,

'लिखा।' चोर बोले, 'जो भी लेना हो सो उठा लेना।' बनिए ने कहा, 'लिखा।' चोर बोले, 'न तो मकान मालिक से पूछना, न उसे रुपये देना।' बनिए ने कहा, 'लिखा।' चोर बोले, 'जो भी माल मिले उसे ले कर घर पहुंच जाना।'

बनिए ने सारी बातें लिख कागज जेब में रख लिया। बाद में सब चोरी करने निकले। चोर एक घर में घुसे और बनिया दूसरे घर में। वहां उसने ठीक वही किया, जो कागज में लिखा था। पहले पिछवाड़े सेंध लगाई। फिर दबे पांव घर में घुसा, दियासलाई जला कर दीया जलाया और एक बोरा खोज कर उसमें पीतल के छोटे-बड़े बरतन बेफिक्री से भरने लगा।

तभी एक बड़ा तसला उसके हाथ से गिरा। सारे मकान में उसकी आवाज गूंज उठी। घर के लोग जाग उठे। सबने 'चोर-चोर' चिल्ला कर बनिए को घेर लिया और उसे पीटने लगे। बनिए को ताज्जुब हुआ। उसने अपनी जेब से कागज निकाला।

जब सब लोग उसकी मरम्मत कर रहे थे, तब वह बोल रहा था, 'भाइयो, यह तो लिखा-पढ़ी से बिल्कुल उलटा है। यहां तो उलटी गंगा बह रही है।'

बनिए की बात सुन कर सब सोच में पड़ गए। मार-पीट रोक कर सबने पूछा, 'यह तुम क्या बक रहे हो?' बनिए ने कहा, 'लीजिए, यह कागज देख लीजिए। इसमें कहीं पिटाई का जिक्र है?' घर के लोग समझ गए। यह चोर नहीं, चुकंदर है। उन्होंने बनिए को घर से भगा दिया।

अलबेली मोरनी

एक था मोर और एक थी मोरनी। दोनों दाने चुग रहे थे। इसी बीच वहां एक तोता आया। उसे इठलाते हुए देख कर मोरनी ने कहा :

मैं अलबेली मोरनी
मुझको भला डर कैसा
मोर भले ही सुंदर है
पर हीरामन है मोती जैसा

यह कह कर मोरनी तो तोते के साथ चली गई। मोर को बहुत बुरा
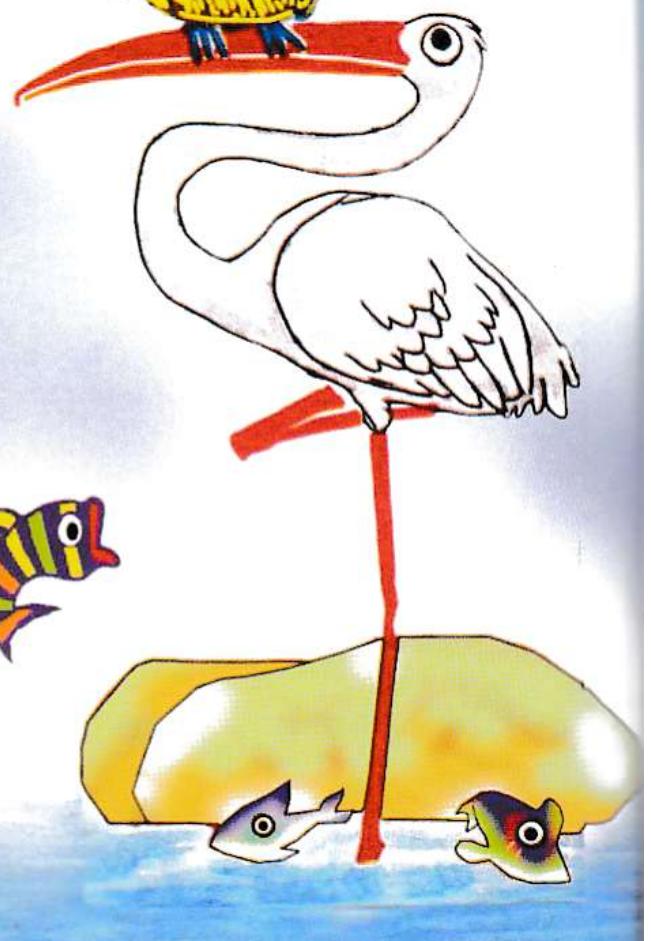
लगा। उसने कहा, 'मैं परिंदों की पंचायत बुलाऊंगा और उनसे न्याय मांगूंगा।' मोर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक मुर्गा मिला। मुर्गे ने पूछा, 'मोर भैया, मोर भैया! कहां चले?'

मोर ने कहा, 'परिंदों की पंचायत बुलाने। मेरी मोरनी तोते के साथ भाग गई है। तुम सभा में आओगे न?'

मुर्गा बोला :

हम तो बांग लगाते हैं
रंग हमारा भूरा है
कौन हम पर यकीन करेगा
वक्त हमारा बुरा है

मुर्गा मोर के साथ नहीं गया। मोर कुछ आगे चला तो उसे बया मिली। बया ने पूछा, 'मोर भैया, मोर भैया! कहां चले?'

मोर ने कहा, 'परिंदों की पंचायत बुलाने। मेरी मोरनी तोते के साथ चंपत हो गई है। तुम सभा में आओगी न?'

बया बोली :

हम तो बया कहलाती हैं
घोसला हमारा अनोखा है
जो मर्द हो कर रोता है
वह मर्द नहीं धोखा है

बया मोर के साथ नहीं गई। दुखी मोर आगे बढ़ा। रास्ते में उसे एक तीतर मिला। तीतर ने पूछा, 'मोर भैया, मोर भैया! कहां चले?'

मोर ने कहा, 'परिंदों की पंचायत बुलाने। मेरी मोरनी तोते के साथ चंपत हो गई है। सभा में तुम आओगे न?'

तीतर बोला :

हम हैं तीतर इस देश के
लड़ाकू बनना हमारा पेशा है
पंचायत है लफ्फाजी का डेरा
वहां क्या काम हमारा है

मोर आगे बढ़ा। रास्ते में उसे बगुला मिला। बगुले ने पूछा, 'मोर भैया, मोर भैया! कहां चले?'

मोर ने कहा, 'परिंदों की पंचायत बुलाने। मेरी मोरनी मुझे छोड़ कर तोते के साथ चली गई है। भैया, थोड़ा समय निकाल कर तुम आओगे न?'

बगुला बोला :

हम बगुले उजले हैं
गरदन हमारी लंबी है
तुम्हारा टंटा तुम जानो
हमने टंटों से छुट्टी ली है

मोर ने सोचा, अब मैं बाज के पास चलूं। शायद वह साथ दे। मोर आगे बढ़ा तो रास्ते में ही उसे बाज मिल गया। बाज ने पूछा, 'मोर भैया, मोर भैया! कहां चले?'

मोर ने कहा, 'परिंदों की पंचायत बुलाने। मेरी मोरनी तोते के साथ चंपत हो गई है। सभा में कोई आने को राजी नहीं। बाज भैया, तुम तो आओगे न?'

बाज बोला :

हम हैं बाज बहादुर
सिर हमारा गंजा है

सबक सिखाने शत्रु को
फौलादी यह पंजा है

मोर खुश हो गया। बाज को अपने साथ ले कर मोर तीतर, बया, बगुला, सबके पास पहुंचा। परिंदों की पंचायत बैठी। सबने बाज से कहा कि वही तोते को ढूंढ़ कर पेश करे। फौरन बाज उड़ा और तोते के कान पकड़ कर उसे सबके सामने ले आया। पंचों ने कहा, 'हीरामन, मोर को उसकी मोरनी दे दो।' तोता बोला, 'मैं नहीं दूंगा।' पंचों ने कहा, 'बाज भैया, हीरामन को सबक सिखाओ और मोर को उसकी मोरनी वापस दिलाओ।'

बाज बोला :

हम हैं बाज बहादुर
सिर हमारा गंजा है
सबक सिखाने शत्रु को
फौलादी यह पंजा है

यह कह कर बाज ने तोते पर झपट्टा मारा। तोता डर गया। बोला, 'म... म...म...मुझे नहीं चाहिए किसी की म...म...म...मोरनी। यह तो म...म...म. ..मोर की शोभा है। भले ही इसे म...म...म...मोर रखे।

मोर को उसकी मोरनी मिल गई और परिंदों की पंचायत बिखर गई।

एक थे मियां जी। एक रोज वह सफर पर निकले। बीवी ने बड़े प्यार से पराठें बना दिए थे। पराठों की पोटली बगल में दबा कर मियां जी चले जा रहे थे। रास्ते में एक राजपूत का साथ हो गया। दोनों साथ-साथ चलने लगे।

कुछ दूर जाने पर मियां जी ने पूछा, 'जनाब, आपका नाम क्या है?' राजपूत बोला, 'मेरा नाम शेर सिंह है। मियां जी मन ही मन बोले...पट्ठा है तो चूहे जैसा, लेकिन हमको डराने के लिए शेर बन रहा है।

इसी बीच राजपूत ने पूछा, 'भाया, आपका नाम क्या है?' मियां जी ने गर्व से कहा, 'हमारा नाम? हमारा नाम है...दो शेर, दो शेरनी, तीन नाग और उन पर सौ बिच्छुओं का एक टोकरा।'

राजपूत समझ गया, मियां जी कोरी डींग हांक रहे हैं! ठीक है, मौका आएगा, तब पता चल जाएगा।

चलते-चलते रास्ते में बबूल की घनी झाड़ी आई। वहां जंगली जानवरों का बड़ा डर था। मियां जी बोले, 'देखो जनाब, जरा करीब रहना। यह झाड़ी घनी है।' राजपूत ने कहा, 'भाया, आप चिंता न करें। मेरे साथ चलते रहिए।' उसे पता चल गया कि मियां जी कितने बहादुर हैं। दोनों कुछ कदम आगे बढ़े। राजपूत ने हंस कर पूछा, 'भाया! जरा अपना नाम एक बार फिर से बता दीजिए। मैं भूल गया हूं।'

अब तक मियां जी कुछ ढीले पड़ चुके थे, फिर भी तन कर बोले, 'मेरा नाम है, दो शेर, दो शेरनी, तीन नाग और उन पर सौ बिच्छुओं का एक टोकरा!'

राजपूत ने कहा, 'वाह, क्या शानदार नाम है!'

तभी कुछ फासले पर शेर दिखाई पड़ा। वह लेटा हुआ था। राजपूत ने कहा, 'भाया, जरा देखिए तो सही, वह शेर किस शान से लेटा है।' मियां जी बोले, 'क्या कहा, श...श...श...शेर! तब तो बेमौत मारे जाएंगे। या अल्लाह! अब तो तेरा ही सहारा...।'

राजपूत ने कहा, 'भाया, आप तो दो शेर, दो शेरनी, तीन नाग और उन पर सौ बिच्छुओं का एक टोकरा-बोकरा भी है न?'

मियां जी बोले, 'अरे जनाब, हम न तो टोकरा हैं न बोकरा हैं। हम तो बस, आपकी गाय हैं। इस वक्त आप ही हमारे सब-कुछ। वैसे असली नाम मियां फुस-फुस अली है।'

इसी बीच शेर जमुहाई ले कर खड़ा हुआ और इन दोनों की ओर लपका। राजपूत ने अपनी तलवार के एक ही वार से शेर का सिर कलम

कर दिया। मियां जी तो उल्टे पांव जाने कितनी दूर भाग खड़े हुए थे। बाद में दोनों फिर इकट्ठे हुए और आगे चलने लगे।

रास्ते में एक नदी आयी। दोनों ने सोचा, अब यहां खाना खा ले। राजपूत बेचारा गरीब था। उसकी झोली में ज्वार की रोटी और मिर्च थी। उसे खोल कर वह खाने बैठा। मियां जी रईस थे। उनकी बेगम ने आलू-मटर के लजीज पराठें बना कर दिए थे। राजपूत ज्वार की रोटी खाता था, बीच-बीच में मिर्च का एक टुकड़ा लेता था और पानी के साथ रोटी के कौर को हलक से नीचे उतारता था। मियां जी मौज से पराठें खाए-जा रहे थे और अपनी बेगम की तारीफ करते जा रहे थे, 'वाह, क्या पराठें बनाएं हैं। क्या स्वाद है। सुबहान अल्लाह।'

राजपूत बेचारा चुपचाप सुनता रहा। दम भर रुक कर मियां जी बोले, 'जनाब शेर सिंह! आप यह क्या खा रहे हैं? बीच-बीच में इतना पानी क्यों पी रहे है?'

राजपूत ने सोचा...यही मौका है, सौ बिच्छु के इस टोकरे को शीशे में उतारने का।

वह बोला, 'भाया, यह तो मैं तीताकंठ शीतलम् खा रहा हूं।' मियां जी ने कहा, 'यह डिश तो हमने न कभी सुनी है न चखी है। सुनो, मेरे ये पराठें आप ले लो और अपनी तीताकंठ हमें दे दो।'

दोनों ने आपस में खाना बदल लिया। जैसे ही मियां जी के पराठें राजपूत के हाथ में आए, वह उन्हें झटपट चट कर गया। फिर पानी पी कर डकार लेने लगा। इधर मियां जी तीताकंठ खाने लगे। लेकिन ज्वार की सूखी रोटी ओर मिर्च उनके कंठ से नीचे कैसे उतरती? मियां जी ने बड़ी मुश्किल से घूंट-घूंट पानी पी कर रोटी के दो-तीन कौर हलक से उतारे।

फिर बोले, 'जनाब, आपका यह तीताकंठ आप अपने ही पास रखें और हमें हमारे पराठें लौटा दें।

राजपूत ने कहा, 'भाया, आपके पराठें मेरे पेट में पहुंच चुके हैं। आपको तीताकंठ खाना हो तो खाइए, वरना नदी में फेंक दीजिए।'

मियां जी का मुंह उतर गया। तब से उनका नाम 'दो शेर, दो शेरनी, तीन नाग और उन पर सौ बिच्छुओं का टोकरा' में से ''में में में में में'' करती हुई बकरी बन गया।

भूत, प्रेत या चुहिया

चार चुहिया थीं। चारों सहेलियां थीं। एक रहती थी चक्की में, एक रहती थी हाट में, एक रहती थी रास्ते में ओर एक रहती थी खेत में। एक रोज एक किसान अपनी बैलगाड़ी ले कर खेत पर जा रहा था। जाने कैसे रास्ते में रहने वाली चुहिया बैलगाड़ी के पहिए तले आ कर कुचल गई। यही नहीं, कुचल कर पहिए से चिपक गई। गाड़ी खेत पर पहुंची। जब किसान गाड़ी में धान भर रहा था, तभी खेत में रहने वाली चुहिया ने पहिए से चिपकी चुहिया को देखा। वह रो दी। फिर उसने किसान के साथ संदश भेजा :

जगत के तात किसान भैया
ओ रे धान वाले बड़े भैया
जा कर हाट वाली से कहना
डूब गई राह वाली की नैया

सुन कर किसान चौंका। कहा, 'यह कौन बोला? यहां कोई आदमी तो है नहीं।'

तभी चुहिया फिर बोली :

जगत के तात किसान भैया
ओ रे धान वाले बड़े भैया
जा कर हाट वाली से कहना
डूब गई राह वाली की नैया

किसान ने चारों ओर देखा, बार-बार देखा, पर कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। वह डर गया और बैलगाड़ी छोड़ भूत-भूत चिल्लाता हुआ भाग खड़ा हुआ।

थोड़ी देर बाद घर आ कर वह हाट में बनिए की दुकान पर तेल लेने गया। वहां उसने बनिए को बोला, 'आज तो गजब हो गया। खेत में बैलगाड़ी ले कर गया तो आवाज आ रही थी',

जगत के तात किसान भैया
ओ रे धान वाले बड़े भैया
जा कर हाट वाली से कहना
डूब गई राह वाली की नैया

तभी हाट में रहने वाली चुहिया चीखी, 'यह किसने कहा है?' बनिए और किसान एक साथ बोले, 'अरे! यह कौन बोला?'

हाट वाली चुहिया ने फिर से पूछा, 'भैया! यह संदेश किसने भेजा है?'

किसान बोला, 'सेठ जी भागो! इस दुकान में भी भूत-प्रेत हैं।' दोनों तुरंत दुकान छोड़ कर भाग निकले।

घर पहुंच कर किसान ने अपनी पत्नी से कहा, 'तुमने कुछ सुना? आज तो बस गजब हो गया। खेत में बैलगाड़ी खड़ी कर मैं धान भर रहा था, तब कोई बोला :

जगत के तात किसान भैया
ओ रे धान वाले बड़े भैया
जा कर हाट वाली से कहना
डूब गई राह वाली की नैया

'मैं तो ऐसा डर गया कि गाड़ी छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। अभी हाट में तेल खरीदने गया, तो वहां भी यही चमत्कार हुआ। मैं सेठ जी से कह रहा था कि आज हमारे खेत में कोई गायब इंसान बोल रहा था। तभी दुकान में से कोई बोला, 'भैया! यह बात तुमसे किसने कही? हम तो वहां से ऐसे भागे जैसे रेस के घोड़े। लगता है जरूर कोई प्रेत हमारे पीछे पड़ा है!'

इतने में तीसरी चुहिया चक्की में से बाहर आई और बोली, 'भैया! मैं जानती हूं, यह संदेश किसने भेजा है। राह वाली सहेली मर गई और खेत वाली सहेली ने राह वाली और चक्की वाली सहेली को यानी मुझे संदेश भेजा है। हाय, गजब हो गया!'

किसान की समझ में अब राज आया। वह बोल पड़ा, 'धत्त...तेरी की, यह तो चुहिया बोली थी। मैं बेकार ही डर गया।'

किसान की पत्नी ने बोली, 'आप तो बच्चे जैसे हैं। एक छोटी-सी चुहिया भी आपको डरा देती है।'
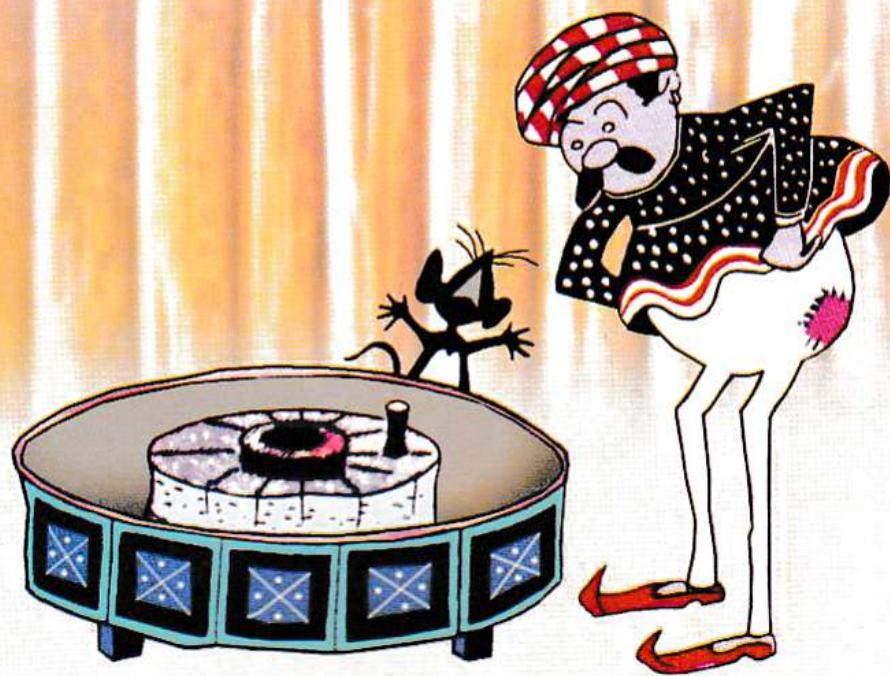
तिकड़मी बनिया

एक पंडित और एक साधु था। दोनों एक साथ यात्रा पर चले। गरमी के दिन थे। दोपहर का समय। दोनों को प्यास लगी, पर आसपास कहीं पानी नहीं था। भूख भी लगी थी। खयाली पुलाव के बारे में सोचते हुए दोनों आगे बढ़ते रहे। रास्ते में एक बनिया मिला। वह भी भूखा-प्यासा था। तीनों ने मिल कर तय किया कि रास्ते में जो भी खाने को मिलेगा, बराबर बांट लेंगे।
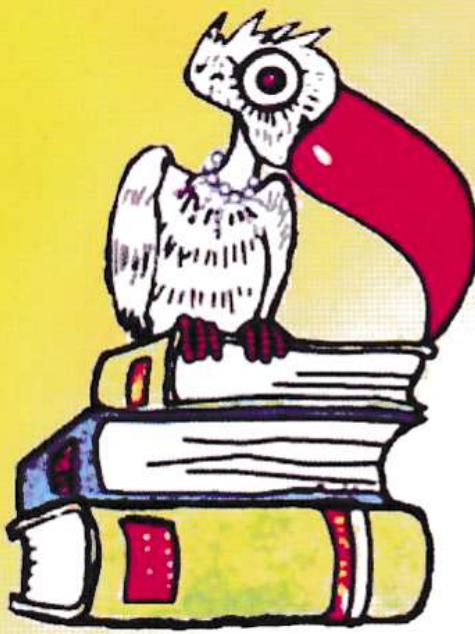
चलते-चलते रास्ते में गन्ने का एक खेत आया। पहले पंडित खेत में पहुंचा और बोला, 'नारायण, नारायण...' गन्ने वाले किसान ने सोचा, जाने ये भिखारी कहां से चले आते हैं? यहां कोई भंडार तो नहीं भरा है कि देते ही चले जाओ! उसने ब्राह्मण को खदेड़ दिया।

अब लंगोटधारी साधु खेत में पहुंच कर बोला, 'अलख निरंजन...' यह सुन कर किसान ने सोचा, इस अभागे देश में इन टुटपुंजियों की कोई कमी नहीं। अब किन-किन को दे और कितना दे!'

उसने बाबा जी को भी भगा दिया।

अब बनिए की बारी थी। बनिया खेत में पहुंचा और उसने किसान पूछा, 'श्रीमान जी, इन गन्नों से गुड़ कब तैयार होगा?'

किसान बोला, 'सेठ जी, आपको कितना गुड़ खरीदना है?'

बनिए ने कहा, 'यही कोई सौ मन।' किसान मन ही मन बोला...इसे कहते है किस्मत।

किसान और बनिए ने मिल कर दाम तय किए और तुलवाने को दिन भी पक्का हो गया। अब विदा लेने से पहले बनिए ने कहा, 'श्रीमान जी, सौदा तय हो गया। कुछ नमूना तो दोगे न?' किसान ने बीस बढ़िया गन्ने उखाड़ कर बनिए को थमा दिए।

लौटने पर बंटवारे का काम शुरू हुआ। सबको बराबर का हिस्सा मिलना चाहिए। लेकिन बनिए ने एक तरकीब की। सोचने का दिखावा कर उसने

कहा, 'सुनो दोस्तो, शास्त्र में लिखा है कि अव्वल ब्राह्मण को हमें आगे का हिस्सा देना चाहिए।'

यह कह कर बीसों गन्नों का ऊपर वाला हिस्सा काट कर उसने पंडित को सौंप दिया। पंडित ने अपना हिस्सा खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। फिर बनिए ने कहा, 'शास्त्र में लिखा है कि बनिए को बीच का हिस्सा मिलना चाहिए।' यह कह कर गन्नों के बीच वाले टुकड़े बनिए ने अपने लिए रख लिए।

अब गन्नों का नीचे का हिस्सा बचा। बनिए ने कहा, 'शास्त्र का तीसरा वचन यह है कि साधु महाराज के लिए जड़ वाला हिस्सा बेहतर होता है, क्योंकि जड़ों में असली ताकत होती है। उससे बूटियां जो बनती हैं।' बनिए ने बीच का रस से भरपूर हिस्सा खुद अपने लिए रखा और पंडित तथा साधु को भी खुश कर दिया। फिर सब खुश हो कर अपने-अपने घर लौट गए।

आगे पढ़िये भाग – 5

शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये है बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आपकभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई